तंत्र कौमुदी
शक्ति सायुज्य अघोर साधना महाविशेषांक
Ninth Issue – FEBRUARY 2012
PART -II
Tantra kaumudi

Dedicated
To
The Divine Holy Lotus Feet of
Param Poojya Sadgurudev Dr. Shri Narayan Datt Shrimali JI
(Paramhansa Swami Nikhileshwaranand ji)
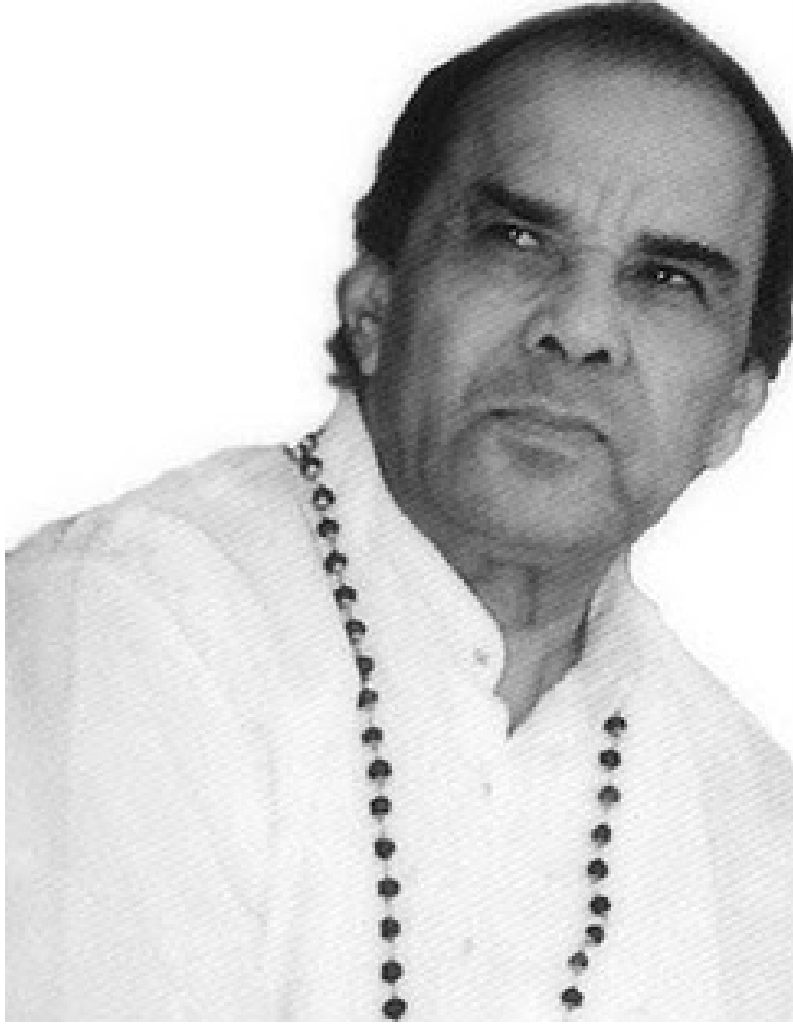
Publisher

Tantra kaumudi e-magazine

Nikhil Para Science Research Unit

Can be contacted through

http://nikhil-alchemy2.com

www.Nikhil-alchemy2.blogspot.com & Nikhil_alchemy yahoo group

Editor *Associates editor s And Creative Designer*

nikhilarif@gmail.com raghunath.nikhil@yahoo.in anuwithsmile@rediffmail.com

Name of the Articles

You can Contact Us at nikhilalchemy2@yahoo.com.

Nikhil isht darshan sadhana

दुर्भाग्य को हटा सकने में समर्थ एक साधना

स्मशान अपने आप मे एक बहोत ही पवित्र शब्द है. हालाकि लोगो ने अपने हिसाब से इसके साथ कई प्रकार की कहानीयो को जोड कर इसे भय का पर्याय ही बना दिया है. संभवत इसके पीछे कई प्रकार के कारण हो सकते है लेकिन आश्चर्य तो यह भी है की कई विद्वानों ने इसे अपवित्र और घृणित जगह घोषित कर दिया. जो मनुष्य के लिए मुक्ति का द्वार होता है, जहा से व्यक्ति मुक्ति की और तथा अपने इष्ट की और कदम रखता हो इस प्रकार के स्थान को अपवित्र कि संज्ञा दे कर उसे अपमानित करना सायद आज कल एक अत्यधिक सामान्य बात है. लेकिन साधक का चिंतन साधना होता है, किसी भी तथ्य को यु ही किसी के कहने पर वह स्वीकार नहीं कर सकता.

अगर भगवान शिव जैसे मुख्य देव का निवास स्थान को घृणा की द्रष्टि से देखा जाए तो वह साधक के लिए किसी भी रूप से योग्य नहीं हो सकता. बल्कि साधक के लिए तो स्मशान एक वरदान स्वरुप ही है. इस लिए क्यों की वह स्थान निरंतर रूप से उर्जामय तथा चैतन्य रहता है, और इस प्रकार के स्थान मे साधना करने पर व्यक्ति की चेतना का तुरंत विकास हो कर सफलता प्राप्ति की संभावना को बढ़ा देता है.

पंचमहाभूत मे विलीनीकरण तथा रूपांतरण की प्रक्रिया निरंतर रूप से किसी स्थान मे होती रहती है तो वह स्मशान ही होता है और इसी लिए उस स्थान विशेष मे उर्जा का विशेष संचार नियमित रूप से गतिशील रहता है. सदगुरुदेव ने अपने काल मे विशेष शिष्यों को स्मशान साधनाओ का ज्ञान दिया था. ये एक नितांत सत्य है की उर्जा के प्रवाह को सहने के लिए साधक मे यथायोग्य हिम्मत तथा हौसले की ज़रूरत होनी चाहिए. लेकिन साधक के लिए तो ये प्रारंभिक गुण है.

श्री निखिलेश्वरानंदजी को कई व्यक्तियो ने अलग अलग रूप मे जाना है, साधना की है तथा उनकी कृपा प्राप्त बने है. स्मशान साधको तथा अघोरियो के लिए भी उनका एक अलग ही रूप रहा है. इसी क्रम मे उनसे सबंधित कई साधनाओ का प्रचलन भी रहा है. ऐसे कई गुप्त प्रयोग है जिन के मुख्य देवता खुद सदगुरुदेव को माना गया है तथा जिससे असंभव से असंभव साधना भी निश्चित रूप से हो जाती है.

कुछ ऐसा ही एक गुप्त प्रयोग है इष्ट दर्शन हेतु. इस प्रयोग करने पर मात्र ३ दिन मे ही साधक को अपने इष्ट के दर्शन हो जाते है. आप समज सकते है की कहा वह लाखो मंत्र जाप और कई अनुष्ठान जिसके बाद भी इष्ट के दर्शन संभव नहीं हो पाते वही इस प्रयोग के माध्यम से व्यक्ति मात्र ३ ही दिन मे इष्ट के दर्शन करने मे सक्षम हो जाता है. इस विशेष तथा देव दुर्लभ प्रयोग को भी मे आप सब के सामने सदगुरुदेवश्री निखिलेश्वरानंदजी के चरणों मे प्रार्थना सह रखना चाहूँगा.

साधक को चाहिए की वह ३ दिन के लिए किसी भी प्रकार का कोई इतर कार्य न करे तथा इष्ट चिंतन तथा गुरु चिंतन मे ही लिन रहे.

इस साधना काल मे साधना के सम्पूर्ण नियमों का पालन करे

वस्त्र काले हो, माला काले हकीक या रुद्राक्ष की रहे, साधक को उत्तर दिशा की तरफ मुख कर साधना मे बैठना चाहिए

स्मशान मे जाने से पूर्व आसान, पूजन, दिग्बन्धन, कीलन वगेरा पूर्ण प्रक्रियाओ को सम्प्पन करने के बाद ही साधना मे बैठे.

साधक सदगुरुदेव के सन्यास रूप की फोटो के सामने ये मंत्र जाप करे

मंत्र : ॐ निखिलेश्वराय स्मशानाधिपतये इष्ट दर्शय दर्शय अघोरेश्वराय हूं हूं

इस मंत्र की ५१ माला जाप करे. स्मशान का चुनाव इस प्रकार करे की साधक के अलावा स्मशान मे कोई और व्यक्ति उपस्थित ना हो. तीसरे दिन मंत्र जाप समाप्त होते होते साधक को इष्ट के दर्शन हो जाते है.

साधना के दौरान साधक को अगर कोई आवाज़ सुनी दे या विशेष द्रश्य दिखाई दे तो विचलित ना हो कर साधना करते रहना चाहिए. ये तीक्ष्ण प्रयोग है अतः कमजोर ह्रदय वाले व्यक्ति को इस प्रकार का प्रयोग नहीं करना चाहिए.

Nikhil Isht Darshan Prayog:

Smashan is very holy word in itself. However people have merged various stories with this and have made this word synonym of fear. Possibly there may be various reasons behind this, but it is also strange that many scholars have also declared this place as foul and disgust. The one which is door of salvation, the place from people proceed towards Isht and salvation it has become fashion and normal day routine for people to term such divine place disgust and to abase it.

But mentality of sadhak is about sadhana, anything said by anyone could not be accepted that way. It is not good for sadhak to see place of lord shiva with disgust way of looking. Rather smashan is boon for any sadhak. As because that place continuously remains full of energy and awaken, doing sadhana on such place do increases possibilities of having success by developing consciousness of the person.

It is the only place where five metals gets dissolve and transformed continuously and thus in that particular place flow of energy remains going. In the time era, sadgurudev had given knowledge regarding smashan sadhana to particular disciples. This is absolutely true that to digest such energy flow sadhak needs to have courage and endurance. But for sadhak these are basic keys.

Shri Nikhileswaranand has been understood, accomplished with sadhana and blesses various sadhaka in various form. For smashan sadhaka and aghori there is completely different form of him. This way many sadhana is also remained famous about his that form. There are many sadhana in which the main god has been believed to be sadgurudev himself and almost impossible sadhanas could also be accomplished.

There is such secret sadhana prayog related to isht darshan in this category. By doing this process of just 3 days one may have glimpses of isht. One may understand that on one side lacs of mantra chantings and many anusthan after which too there remains possibilities of failure in isht darshan and on other hand this prayog will let person have isht darshan siddhi iin just 3 days. By putting my prayers in the holy feet of sadgurudev nikhileshwaranand ji, I would like to place this very rare and special process in front of you.

Sadhak is requires not to do any other works for 3 days one must remain in contemplation of Isht and sadgurudev.

One should follow all the rules of sadhana in sadhana duration

Cloth should be black in color, rosary could be black hakeek or rudraksha, sadhak should sit facing north direction.

Before sitting in smashan, sadhak should do process of aasan, poojan, digbandhan, kilan etc.

Sadhak should do mantra chanting in front of the sadgurudev's ascetic form picture.

Mantra: Aum nikhileshwaraay smashaanaadhipataye isht darshay darshay aghoreshwaraay hum hum

51 rosary of the mantra should be done. Smashan should be selected where no other person during sadhana should be available.

On the third day before mantra chanting is completed one will have glimpses of isht. In sadhana duration if one hears any unusual noise or visualization, one should continue sadhana without fear. This is tikshna prayoga and those who have fear in heart should not attempt such prayoga.

Aghor mantra ......

इस मार्ग की दिव्यता से आपको परिचित कराते हुए

भारतीय साधना क्षेत्र में जो भी उच्च कोटि के महा योगी हुए हैं यह तो सर्व मान्य तथ्य की उनका कुछ न कुछ इस मार्ग से सबंध रहा हैं , और ध्यान से देख जाये तो तो साधक और इष्ट के बीच दो स्थितिया बनती हैं पहली भक्ति प्रधान हैं जहाँ साधक अपना सब कुछ अपने इष्ट को सौप देता हैं और दूसरा मार्ग यह हो सकता हैं जहाँ साधक अपनी स्व शक्ति के बल पर सब करता हैं.

हालाकि यह स्व शक्ति भी उसके सदगुरुदेव द्वारा प्रदत्त रहती हैं और इस दुसरे मार्ग की संज्ञा अघोर मार्ग से की जा सकती हैं, जहाँ साधक केबल और केबल अपनी आत्म पर ही आश्रित रहता हैं .

इस मार्ग में अनेको मंत्र हैं जो तत्क्षण परिणाम देने में समर्थ हैं पर अगर कोई मंत्र हैं जिसको की इस मार्ग का अन्यतम मन्त्र कहा जा सकता हैं तो वह हैं " अघोर मंत्र " और इस मंत्र की विशेषता और प्रभावकता के बारे में यही कहा जा सकता हैं की भगवान शंकर के सर्वश्रेष्ठ शिष्य आचार्य पुष्प दन्त कहते हैं की इस जैसा मंत्र तो संभव ही नहीं हैं जो की जीवन में सब कुछ देने में समर्थ हैं इस लिए उन्होंने कहा "अघोरानाम परो मन्त्र" मतलब इससे श्रेठ कोई ओर मंत्र नहीं हैं .

और इस महा मंत्र की उपयोगिता का तो कुछ वर्णन ही नहीं किया जा सकता हैं . यहाँ तक की पारद संस्कार में भी इसका उपयोग हैं , क्योंकि यदि पारद अंतिम तंत्र हैं तो निश्चय ही इस मार्ग के योगियों ने भी इस और ध्यान न दिया हो या रखा हो यह माना नहीं जा सकता हैं . पर वे प्रक्रिया इतनी तीक्ष्ण और सटीक और इतने कम उपकरणों और जड़ी बूटिया ले कर संपन्न हैं की क्या कहे ...कभी कभी तो व्यक्ति को प्रक्रिया पर ही विस्वास नहीं हो पाता हैं की उसने क्या किया हैं केबल जल मात्र से संस्कार और इन सबके पीछे कहीं न कहीं उस अघोर मन्त्र की क्षमता और शक्ति हैं .

यह बहुत ही ध्यान रखने की बात हैं की मानव शरीर में आत्मा और प्राण दो अलग अलग चीजे हैं जिसे भूल वश एक ही माना जाता हैं. मानव शरीर में १० प्राण माने गए हैं. जैसे ही व्यक्ति की आत्मा शरीर छोडती हैं जाते हैं मतलब वह मृत्यु प्राप्त करता हैं ९ प्रकार के प्राण तत्काल उसके शरीर को छोड़ कर निकल जाते हैं, १० वा धनजय उसके कपाल में उस व्यक्ति की मृत्यु के बाद तक रहता हैं .उसकी मुक्ति के लिए हीमृत मानव देह के दाह संस्कार में एक प्रक्रिया कपाल क्रिया भी हैं , पर आप जानते हैं की औघड़ संप्रदाय में कपाल क्रिया नहीं होती हैं .

और औघड़ संप्रदाय पुनर्जन्म और मुक्ति के बारे में चिंता नहीं करते हैं क्योंकि यह मार्ग आत्मा बुद्धि का मार्ग हैं और यह दोनों चीजे तो उसके लिए हैं जो देह बुद्धि रखता हैं .

बार बार सभी महा योगियों ने कहा हैं की जीवन में सम भाव रखा जाए , और विचलित नहीं हुआ जाए . पर मन तो कभी मध्य में रहता ही नहीं वह तो हमेशा से अति पर रहता हैं तो इसे कैसे मध्य में लाया जाए हर मार्ग की एक अपनी की प्रणाली हैं और निश्चय ही अघोर मार्ग प्रणाली में इसको नियंत्रित करने की या सम भाव में रखने की एक अलग ही व्यवस्था हैं .

मानव जीवन पञ्च ज्ञानेन्द्रियो पर निर्भर करता हैं ये शब्द , रस , गंध , स्पर्श , रूप निश्चय ही इन को नियंत्रण में करने के लिए जैसे रस को नियंत्रण में लाने के लिए कडवे और घृणित पदार्थ भी सम भाव से खाते हैं और यही बात लागु होती हैं उनके द्वारा अपशब्दों की वारिश करने में .

इस मार्ग की विशेषता बताते हुए वाराणसी के अघोर आचार्य भगवान् राम ने कहा था की " अघोरेश्वर लोग आत्म बुद्धि के होते हैं, वे देह बुद्धि के नहीं होते हैं , देह संज्ञा उनको दीखता हैं या आत्म संज्ञा में वे प्रविष्ट रहते हैं इस लिए इस काया के पात हो जाने पर भी आकाश खप्पर या कपाल खप्पर में वे निवास करते हैं ,इन्द्रिय निग्रिहित , चित्त निग्रिहित , मन निग्रिहित साधको को, उपासको को , अधिकारीयों को , वे सदैव मिलते रहते हैं उनकी रक्षा करते हैं , उनको हर सिद्धिया देने वाले होते हैं . हर कामनाओ और इच्छाओ को पूर्ण करने वाले होते हैं "अघोरानाम परो मन्त्र" में रमण करने वाले अघोरेश्वर होते हैं . “

****

Aghor mantra Marg

In Indian sadhana field , who so ever the great mahayogi comes , more or less they also have some connection to this Aghor marg . if observing very keenly than two stages has come to our consideration the first one in that a sadhak offers his complete or complete surrender to his /her isht deity .

and second way is possible where a sadhak would achieve everything through his self inner power. Yes it is true that this self inner power also Is the manifestation of saddgurudev jis given power. And this second marg can be known as Aghor marg .

Here in this way or marg's sadhak is totally depended on his self . there are many mantra practiced in this holy path and are able to produce quick result but one mantra is supreme and that can be said crown of this marg, and known as ""Aghor mantra " what can be said about the power and effectiveness of this mantra even the disciples of Bhagvaan Shankar's pushpdantachry says that like this mantra no other mantra is possible. And he said "Aghoranaam paro mantra "

And no one can describe the effect of this Aghor maha mantra even in parad Sanskar , this maha mantra is used (in Kapalik way of Sanskar) since if parad tantra is considered the last and supreme among all branch of tantra , than ho w this can be possible that the yogies belongs to this marg dopes not pay attention to this area .

but the process a re so quick and accurate and with least used of apparatus and herbs , sometimes even the person is doing the Sanskar get amazed how only through water thses Sanskar can be done . and behind in all that the power of this mantra works,

And this point is most important to understand that in human body aatma (soul) and praan (life energy) are two different things . but we all mistakenly consider that two things as one . when soul left the body , 9 types of life energy / praan on that point leaves the body and only one praan still available in that dead body, and is known as dhanjay praan .

that's why after the death when human body be burnt one special process has to be done known as kapaal kriya . but in this Aghor sect no kapaal kriya happened.

And Aughad are least concerned with reincarnation or final libration since they always in the state of attam budhhi and mentioned two things belongs to deh buddhi .

This has been said by various maha yogies repeatedly that evenmindness is the key to success in the life but the mind always wandering here and there and like to go to extreme. So how that is be possible , every marg has some specific method to achieve that so also is the case in Aghor marg.

Human life depended upon five gyannedriya means 5 sense of relate d to gyan, that are word, taste, aroma, touch , beauty and thses should be in control but how that are going to be possible for example to control taste, Aghor sadhak taste with the same way to bitter and uneatable things and same things is applicable in regards using abusive word, inner meaning remains the same means to be outside of thses 5 senses boundary.

To describe the speciliaties of this Aghor marg Aghor achary Bhagvaan Ram of Varanasi said " Aghoreshar are having aatmt budhhi (inner self inteelgence) , they are not belongs to body. Though they can see body but always immersed in self. That's why even when there body destroy they lives in Aaksh khappar or in Kapaal khappar .

they are always meet , protect and help ful to those sadhak who are indriy nigrhit , chitt nigrhit , man nigrhit (complet jitendridy I,e who have total control of his all senses). They provide siddhita to them and are able to fulfil every wish to them, they are immerse in Aghoranaam paro mantr ".

Shiv lok Sadhna rahSy
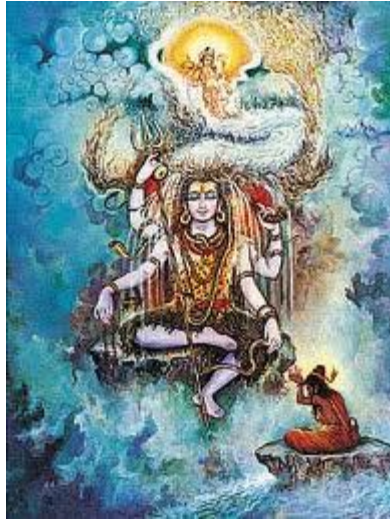
एक अद्भुत साधना जो सुनी ही नहीं गयी

हमारे पुराणोंमें कई प्रकार के लोक लोकान्तरो का उल्लेख मिलता है. देव लोक, यक्ष लोक, गन्धर्व लोक, ब्रम्ह लोक, शिर लोक, इंद्र लोक. वस्तुतः मुझे लगता था की हमारे पुराणमे जो भी लिखा है वह सत्य है लेकिन संकेतात्मक रूप मे विविध उल्लेख मिलता है. कहानियो के पीछे कई प्रकार के हार्द तथा लक्ष्य हो सकते है, जिन्हें मात्र उस विषय मे गहरी शोध के बाद समजा जा सकता है. जैसे की मार्कंडेय पुराण मे स्थित दुर्गासप्तसती पूर्ण तंत्रोक्त विधानों का संग्रह है. सामान्य व्यक्ति को वह सिर्फ एक कहानी ही प्रतीत हो सकती है. और लोक लोकान्तरो के विषय मे भी लोगो की यही धारणा बनी की यह मात्र कहानिया ही है. लेकिन ऐसा नहीं है. हमारे तंत्र ग्रंथो मे बराबर कई एसी साधनाओ के विधान दिये है जिसके माध्यम से कुछ दिनों मे व्यक्ति सूक्ष्म रूप से लोक लोकान्तरो की यात्रा कर सकता है.

जीवन का यह दिव्य सौभाग्य ही है की हम उन लोक मे जाए वहा के निवासियों को देखे तथा उनके साथ वार्तालाप करे. वहा की दिव्यता का आनंद उठाये. वहा के सौंदर्य को आत्मसार करे. देवताओ के जिन लोको का उल्लेख है वहा वे देवता सशरीर निवास करते है, उनके दर्शन कर, आशीष पा कर जीवन को दिव्य बनाए. कुछ ऐसा ही चिंतन ले कर मे भी जुट गया इस दिशा मे. और साधना के अंतिम दिन जो भी अनुभूतिया हुई वह दिव्य अनुभूतियो को कोई भी लेखनी लिख नहीं सकती. सामान्य व्यक्तियो के लिए यह भी एक कहानी ही हो सकती है .

लेकिन जिन्होंने अपने सदगुरुदेव के साथ समय बीताया है तथा उन के चरण कमलों मे साधना ज्ञान को प्राप्त किया है वह भलीभांति समज सकता है की साधना के माध्यम से कुछ भी असंभव नहीं है. शिव लोक भी ऐसा ही एक लोक है जिसका विवरण कई बार प्राप्त होता है. यहाँ तक की यह लोक मे भगवान सदाशिव् का स्थायी निवास भी बताया गया है. इसकी भौतिक स्थिति पर कई प्रकार के वाद विवाद हो सकते है. किसी कल्पना की तरह ही यह लोक अत्यधिक दिव्यता युक्त है. बर्फीले वातावरण मे प्रकृति अपने पूर्ण श्रृंगार के साथ इस लोक मे स्थायी रहती है. साथ ही साथ कई श्रेष्ठ योगी जिन्होंने अपने साधना बल से इसमें प्रवेश किया है वह इधर उधर विचरण करते हुए नज़र आते है. तो किसी तरफ शिव के सहायक गण की भी यातायात रहती है,

जिसमे वीरभद्र तथा भैरव भी सामिल होते है. आगे के स्थान मे जहा पर अपने आप ही औम नाद का गुंजरन होता रहता है वहा पर एक अत्यधिक मनोहर स्थान पर उच्च वेदी पर भगवान सदाशिव अपने पूर्ण रूप मे हमेशा विद्यमान रहते है. सामने कई योगी महायोगी तथा अन्य सेवक गण तथा लोक लोकांतर से आये शिव भक्त शिव अर्चना मे भव विभोर हो के मग्न ही रहते है.

क्या होगा इससे बड़ा सौभाग्य की देवताओ की प्रत्यक्ष पूजा की जाए. योगी जन समाधी मग्न होते है. सौभाग्य शाली भी होते है कुछ एक जिन्हें सदाशिव अपने श्रीमुख से खुद ही आशीर्वाद देते है. कल्पना से भी परे अगर कोई मधुर अनुभव होगा तो वह यही होगा. इस शिवलोक मे प्रवेश साधना के माध्यम से मिल सकता है. इस अत्यधिक दुर्लभ विधान को प्राप्त करने के लिए क्या क्या करना पड़ा था यह तो पूरी एक अलग ही कहानी है लेकिन मेरे सभी भाई बहेनो के मध्य मे इस विधान को भी रखना चाहूँगा ताकि सब अपना जीवन दिव्यता की और अग्रसर कर सके तथा देख सके की साधना मे आज भी कितनी शक्ति है.

इस विधान को सोमवार रात्रिकाल मे १० बजे के बाद करना चाहिए. साधक को अपने सामने विशुद्ध प्राण प्रतिष्ठित पारदेश्वर की स्थापना करनी चाहिए. तथा उसका पूर्ण पूजन करे. धतूरे के फुल अर्पित करे. साधक का मुख उत्तर की तरफ होना चाहिए तथा कमरे मे दूसरा कोई व्यक्ति ना हो. पूजन के बाद साधक मंत्र का पूर्ण श्रद्धा के साथ जाप करे. इसके लिए रुद्राक्ष माला का जाप हो. साधक के वस्त्र काले या फिर सफ़ेद रंग के हो. वस्त्रों के रंग का आसान हो. साधक को पहले एक माला लघु अघोर मंत्र की करनी चाहिए.

ॐ अघोरेभ्यो घोरेभ्यो नमः

इसके बाद साधक दिव्य शिवलोक मंत्र की ५१ माला मंत्र जाप करे

ॐ शिवै त्वंलोकप्रसीद अघोरेश्वर्ये दिव्यदर्शय आत्मद्रष्टि जाग्रयामि फट्

मंत्र जाप समाप्ति पर शिव को ही मंत्र समर्पण करे. इसके बाद साधक वही पर सो जाए. यह क्रम अगले सोमवार (कुल ८ दिन) चालू रखे. अंतिम रात्री को सोने के बाद साधक अपने सूक्ष्म शरीर से शिवलोक मे निश्चित रूप से प्रवेश करता है तथा भगवन सदाशिव के दर्शन को कर लेता है. माला को प्रवाहित ना करे. उसे पूजा स्थान मे स्थापित कर दे.

Secret of shiv loka sadhna:

in our purana literature we find mention of various lokas (worlds). Devalok, yakshloka, gandhravaloka, bramha loka, shir loka, indra loka. Actually, I used to feel that whatever have been written in purana is true but it is mentioned in indicative way. Behind every story there may be various type of moral and thinking, which could only be understood after deep research in the subject. For example durga-saptashati from Markandeya Purana is set of various tantra processes. For a normal human being it is just another story of goddess.

And the same thinking stays in the mind of the people about various worlds that those are just stories. But it is not that. In tantra field there are so many processes given with which human can travel in various world in some days with astral body. It is divine fortune to visit those worlds to see livening there and to speak with them.

To have joy of the divineness of that place. To establish that beauty within. With glimpses of the gods, who recites in their particular worlds to move toward divine life. Wondering the same, I too started putting my efforts in this direction. And on the last day of the sadhana whatever the experience been had, No words can write about that divineness.

This also may be story for general people but those who had spent time with sadgurudev and those who had received knowledge of sadhana under his lotus feet guidance they can very well understand that nothing is impossible with sadhana. Shiva Loka is also such world about which many time mentioning of the same if found.

It is also said to be permanent residence of lord Shiva. Physical location of this place may create various controversies. Like any imagination this world is also filled with complete divineness. In the snow atmosphere, nature stays at its best in this world. Various yogis of the higher stage who have entered with their sadhana accomplishment in this place could be seen wandering here there.

On other side there remains walking of various shiva service crew including veerbhadra and bhairava. Furthermore the best place ahead where Aum naad keeps on sounding at one most beautiful place there remains lord Shiva in his complete form always on a heighted aasana.

In front of the same there remains yogis mahayogis and other one and people from various loka being completely lost in shiva worship. What could be more fortune then worshiping the gods in their real form. Yogis also could be fined in Samadhi state. Fortunate are also found who receives blessing from holy mouth of the lord himself.

If there is any experience the divineness of the same could not be expressed in the words would be this. In this shiva loka, one may have entry through sadhana. to get such divine and rare process what things I was went through is completely different story but for my all brothers and sisters I would like to share the process so that everyone can make their life move toward divineness and can see that how much power sadhana have today even.

This process should be done in night time after 10 on Monday. Sadhak should establish pure paarad shivalinga (pran pratisthit) and should do the poojan. Flowers of Dhatoora should be offered. Face of the sadhak should be facing north and any other person should not be in the room.

After poojan, sadhak should start mantra chanting with faith. Rudraksh rosary should be brought in use. Cloth should be black or red. Aasan should be of the same color of cloths. Sadhak should first do one round of Laghu Aghor Mantra

Aum Aghorebhyo Ghorebhyo Namah

After that sadhak should chant 51 rosary of Divya Shivaloka Mantra

Aum shivei tvamlokpraseed aghoreshwarye divyadarshay aatmadrashti jaagrayaami phat

After mantra jaap is completed, offer the same to shiva. After that sadhak should sleep at tha same place. This process should be continuing till next Monday (total 8 days). On the last night after sleeping sadhak will for sure enters in the shiva loka with astral body and can have glimps of lord shiva. Rosary should not be dropped in water. It should be placed in worship place.

Aghor marg - a incident
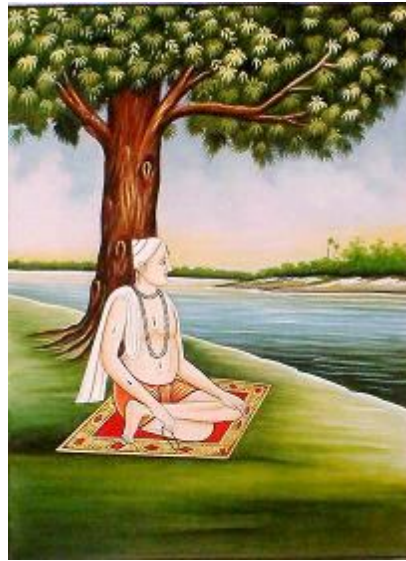
एक अद्भुत घटना जो इस मार्ग की क्षमता बता सकने में समर्थ

यह तो भारतीय जन मानस में विख्यात हैं की एक अघोरी कुछ भी कर सकता हैं उसके वरदान देने या श्राप देने की घटनाये तो हम सभी ने सुनी हैं ही , ऐसी ही एक घटना आपके सामने उपस्थित हैं.

गोस्वामी तुलसी दास जी के पास एक गरीब ब्राह्मण आया और उसने कहा की आपकी ख्याति प्रभु हनुमान के भक्त के रूप में सभी जानते हैं .

कृपया यह बताये की मेरी कोई संतान नहीं हैं तो कब तक होगी, गोस्वामी जी ने देखा तो पाया कि उसे कोई संतान योग हैं ही नहीं , उन्होंने उसे यह बता दिया पर संतावना देते हुए बोले की रात्रि में हनुमान जी से मैं बात करूँगा ,

भगवान् हनुमान जी ने भी वही उत्तर दे दिया की अगले सात जन्म तक संतान योग नहीं हैं. वह ब्राहमण निराश हो कर चला गया . गंगा नदी के तट पर बैठा हुआ था तभी एक अघोरी उनके सामने से गुजरा उसके पूछने पर उन्होंने सारी बात बता दी उसने बात सुनकर कहा घर में जितनी खाने की रोटी हैं ले कर आ जा , चार रोटी ही वह ब्राहमण ले कर आ पाया तो उस अघोरी ने कहा जा चार संतान तेरे यहाँ होंगे , और जब उस ब्राहमण की स्त्री गर्भवती हुयी तो उस ब्राहमण ने जा कर गोस्वामी तुलसी दास जी को जी भर के सुनाया .

गोस्वामी जी इस घटना से व्यथित होकर भगवान् हनुमान जी से पूंछा की आपका कथन कैसे गलत हुआ??? ,

हनुमान जी ने भी परेशां हो कर इस प्रशन का उत्तर अपने इष्ट भगवान् राम से पूंछा , भगवान् राम ने कहा मेरी सृष्टि में तो यह संभव नहीं हैं पर एक सदगुरुदेव निर्माण कर सकता हैं .

और वह अघोरी कोई और नहीं वाराणसी के प्रसिद्द अघोरी संत बाबा किना राम जी थे . यह घटना आपको बता सकती हैं की सदगुरुदेव तत्व और अघोरी मार्ग का साधक क्या क्या कर सकता हैं

****
****

. **Aghor marg One incident**

This have been much popularized in Indian mentality that a Aghori can do anything or everything and we have listen many such true stories regarding their boon and curse.

One very penniless Brahman reached near to Goswami Tulsidaas ji and told him that your fame was all around as true devotee of Bhagvaan ram , so plz tell me when could I have a child since still so many years has been passed am still childless .

Goswami ji took analysis and found that he had no yog for child, and informed him and sympathetically told him that he would talk to Bhagvaan hanuman ji in this regards at night .

Bhagvaan hanuman also replied the same and said even in next seven life he will have no chance to have issue. the Brahmin was very very much disappointed, while sitting on the bank of ganga river , Aghori passed in front of him, on his asking the Brahmin told the whole story.

The Aghori after listening the story, told him go to your home and come with as much as chapatti you had ., the Brahman was able to came there with only four chapatti, on seeing this the Aghori replied ok now I bless you , that you would have four children. When the Brahmin wife got pregnant than the Brahmin went to tulsi daas ji and spoke him with so much anger about his failed prediction.

Goswami tulsi daas ji also became very frustrated and told Bhagvaan hanuman ji why his prediction got failed.

Listening all this even Bhagvaan hanuman ji asked the reason to Bhagvaan ram, Bhagvaan ram replied , this is not possible in my creation but a Sadgurudev can do that easily.

And that Aghori is none other than the famous Aghor achary baba kina ram ji.

This incident can open our eyes that what a Aghor sadhak and sadgurudev tatv can do.

What is asht pash ??

क्या हैं ये पाश - इनके बारे में एक विषद व्याख्या

अभी हमने यह समझा की शक्ति और अघोर तत्व क्या हैं अब इस लेख मे कुछ और महत्वपूर्ण बाते अघोर तत्व या घोर तत्व से सबंधित कुछ तथ्यों पर आपके सामने हैं...

भगवान् शकर के षड्मुख में से छह आम्नाय का प्रस्फुटन हुआ और इन आम्नाय को हम दिशाओ के नाम से जानते हैं और हर आम्नाय किसी एक विशेष या प्रधानता से जुड़ा हैं जैसे पूर्व आम्नाय कर्म काण्ड से तो दक्षिण आम्नाय में भक्ति तो उत्तर आम्नाय में कर्म ,,,,उर्ध्व आम्नाय में योग प्रधानता हैं जो अधर आमनाय हैं उससे अघोर पथ प्रधानता हुआ .

इस मार्ग के सिद्ध हस्त साधक को संसार की कोई भी भयानक से भयानक परिस्तिथि डिगा नहीं सकती हैं न तो कोई भय न कोई विपरीतता उसके मार्ग में आड़े आ सकती हैं और वह वह पशु भाव से कहीं आगे बढ़कर वीर भाव का साधक होता हुआ आगे बढ़ता जाता हैं, हर मार्ग में कोई न कोई तत्व कई प्रधानता रहती हैं तो अघोर मार्ग भी रज और तम दो तत्वों की सहायता या इन तत्वों का आधार लेता हैं.

तंत्र साधना में पांच पीठो का अपना एक महत्त्व हैं और ये हैं अरण्य पीठ, शून्य पीठ, शमशान पीठ, शव पीठ, श्यामा पीठ और इन पांच पीठो को सफलता पूर्वक जो संपन्न कर लेता हैं वह ही वास्तव में तंत्र की साधना के योग्य होता हैं, इसका मतलब हम जो अभी तक साधना करते हैं वह वास्तव में एक आधार बनाना मात्र हैं जबकि तंत्र तो कहीं और उचाई पर स्थित हैं, इनमे से एक एक पीठ का अपना महत्त्व हैं और भले ही इन्हें प्रारंभिक कहा जाए पर ये इतनी आसान नहीं हैं ..

पर अघोर मार्ग की उच्चता कहे की वह साधक को सीधे ही तीसरे पीठ में बैठने की योग्यता दे देता हैं और व्यक्ति को अष्ट पाश से मुक्ति का और साधना नियमो से मुक्ति का एक राज मार्ग दे देता हैं .

बार बार यह उल्लेख किया जाता हैं हैं की अष्ट पाश तो आखिर ये हैं क्या ???

और इन अष्ट पाश को समझने के लिए हमें सबसे पहले यह जानना चाहिए की साधना में भाव क्या हैं इन भाव की सहायता से ही साधक का वर्गीकरण होता हैं और ये हैं पशु भाव, वीर भाव, दिव्य भाव .

सारे सामान्य साधक पशु भाव याने जो बंधा हुआ हो उसके अंतर्गत आते हैं और इन बन्धनों से बंधे रहने के बाद व्यक्ति की यात्रा प्रारंभ होती हैं और उसे पाने एक एक पाश काट फेकने पड़ते हैं और फिर अगली सीढ़ी हैं ...... वीरता के साथ उनका सामना करते हुए वीर भाव का साधक बनना और फिर अंतिम सर्वोच्च स्तर मतलब दिव्य भाव मतलब सभी में दिव्यता का मानना नहीं बल्कि साक्षात् दर्शन करना, महसूस नहीं प्रत्यक्ष अनुभव करते हुए उपयोग करते जाना

और ये अष्ट पाश हैं **भय, लज्जा, घृणा, कुल, शील, शंका, जाति, जुगुप्सा**

घृणा - हमारे शरीर के अभिमान को बताती हैं और यह वस्तु हमारी इच्छा या रूचि के अनुसार मन भावन नहीं हैं तो ..इसका उदय होता हैं जब तक किसी भी साधक को यह रहेगा वह पशु ही हैं और यह तो सदगुरुदेव की कृपा से ही छुट सकती हैं

लज्जा - व्यक्ति कभी अपनी शारीरिक या मानसिक या सामाजिक परिस्तिथियों के कारण हमेशा या किन्ही विपरीत परिस्थिति में शर्माता हैं या कुछ कह पाने में या सामने आने में घबराता हैं यह सब इस पाशके अंतर गत हैं

कुल - साधक को यह अभिमान रहना की वह उच्च कुल का हैं या अन्य निम्न कुल के हैं और उसके अनुसार आचरण करना यह सब भी झूटे शरीर के अभिमान को बढ़ाने में सहायक हैं

जाति- साधक को यह अभिमान रहना की वह उच्च जाति का हैं यह भी एक प्रकार से शरीर से संबंधित हैं क्योंकि आत्मा एक वही परम आत्मा का अंश होने से जाति से संबंधित नहीं होगी यह तो शरीर हैं जो इस पाश से जुड़ा हैं और शरीर के अंतर्गत आत्मा होने से वह भी अपने मूल भुत स्वरूपों को भूली पड़ी रहती हैं

शील - व्यक्ति को कतिपय सामाजिक नियमो बंध कर कार्य करना जैसे की मन चाह रहा की यह आपको पसंद नहीं हैं फिर भी सामने वाले से न कह पाना भी इसके अंतर्गत आता हैं .

शंका -किसी भी वस्तु के सत्य स्वरुप को न जानने के कारण यह उत्पन्न होती हैं और इसका स्वरुप बड़ा ही भयंकर हैं , और यह पाश व्यक्ति की आध्यात्मिक उन्नति को नष्ट कर डालता हैं हर बात पर शंका

जुगुप्सा - यह व्यक्ति के दोष बढ़ाने में सहायक हैं वह दुसरे के दोष देखता हैं पर उसे स्वयं के दोष नहीं देखते हैं , और वह दुसरो पर भी दिन रात दोषारोपण करने में व्यस्त हो जाता हैं

भय - किसी भी परिस्थिति में अज्ञात से भय फिर वह चाहे सूक्ष्मवासना शरीर धारी भुत प्रेत आदि इतर योनिया हो या मानव के द्वारा बनायीं गयी या परालौकिक विपत्ति का आ जाना की आशंका इसके अन्तरगत आता हैं .

इस तरह से इन पाशो को समझा जा सकता हैं , पर इनसे मुक्त कैसे हुआ जाए यही एक सबसे बड़ा प्रश्न हैं और जब तक जीवात्मा इन अद्रिस्य बन्धनों से बंधी हैं तब तक वह अपने मूल स्वरुप में कैसे आ सकती हैं , और इसके लिए केबल दो ही रास्ते हैं पहला तो लगातार साधना मय बने रहना और दूसरा सदगुरुदेव की अहेतुक कृपा इसके अलावा और कुछ नहीं , और जब यह आठों प्रकार के पाश से व्यक्ति मुक्त हो जाता हैं .

तब वह सही अर्थो में संसार में बिखरा सौन्दर्य और उस एक तत्व की विशालता और महत्ता सर्व मयता से अभि भुत हो जाता हैं और इन आठो घोर तत्वों से मुक्त वह आत्मा ही वास्तव में एक अघोरी कहलाने में गौरव कहलाती हैं और जो भी इन बन्धनों से मुक्त हो गया वही हैं इस पथ का गौरव अन्यथा मानव जीवन तो इतना इन पाशों से बंधा हैं की वह हमेशा इन बन्धनों को ही अपना लेता हैं

****

****

Asht pash : general introduction

Till now we have understand what is shakti and Aghor tatv now here in this articles some of the points regarding Aghor or ghor tatv .

This is very well known facts that through six face/mouth of Bhagvaan shiv , six ammnay appeared . And these are named on the six direction .and every ammnay related to any one specialties . like purv ammnay related to karm kaand , Dakshin ammnay related to bhakti , uttar ammnay related to karm , and urdwa ammnay related to yog but adhar ammnay related to Aghor path .

The siddha sadhak of this Aghor path can not be shacked through danger to dangerous condition of this world , neither any fearsome condition nor any adversity can shake him and he is a sadhak belongs veer bhav nor pashu bhav . in each marg , there may be some element / tatv has more reflection . and Aghor marg has more reflection from sat and raj tatv.

Five peeth has a much significance in tantra field and thses are arany peeth, shoony peeth, shamshan peeth, shav peeth, shayama peeth and those who can cross thses five peeth successfully , only than he can only be eligible for the tantra sadhana .

that simply means till than what we do sadhana is only for making base or foundation stone, but in reality, the tantra is much much above to that. Each peeth has its own importance. may be thses are called preliminary but are not so easy to cross.

But this can be considered that the importance of Aghor sadhana path that he give access to sadhak directly to third peeth and provide a way for a sadhak to free form asht pash and free from sadhana's rules regulation.

Many times we talk about asht pash , but what are they ???

Before understanding thses , first we have to understand what is the bhav in tantra , and sadhaka's classification are done bases by thses bhav. Thses are pashu bhav , veer bhav, divy bhav. All the general sadhak or you can say sadhak who traded on this sadhana path are belongs to pashu bhav only .

And while covered through thses asht bhav , a sadhak journey starts and he has to remove one by one his all pash. And than next stage arrive that fighting with thses pash and became a veer bhav sadhak . and than in last watching /feeling/experiencing divinity in all objects of this world.than a sadhak can be considered a Divya Bhav Sadhak.

And thses asht pash are **bhay** (fear), **lajja**(shame), **ghrinaa** (hate), **kul** (family order), **sheel**(following society rules), **shanka** (doubt), **jati** (caste), **jugupsa** (critising to other)

Hate - this also related to body feeling and if any object is not as per our like than this arises. Until this feeling removes sadhak belongs to pashu bhav, this pash can be removed through Sadgurudev blessing.

Lajja –due to some personal . physical and financial reason many people has fear to come forward, or express himself aal thses comes under this pash.

Kul - this also creates a ego that sadhak belongs to higher section of society or family order, and behave accordingly ,and pay to attention to other kul person.

Caste- this also creates a feeling that sadhak belongs to higher caste this also related to physical since soul

Sheel - this pash also creates a feeling always in sadhak mind that he ha s to do what the society think right or always worried what the society thinks if he do this or that.

Shanka- this perhaps the most dangerous pash meaning doubting anything or every one and this should be removed at all cast.

Caste- this creates a feeling that I a belongs to higher caste so I am a superior ore belong to lower caste a sign of inferiority comes , that never accept that a sadhak is a soul who has to caste.

Jugupsa- perhaps most loving pash , who are not taking joy criticizing other on the bases of known or unknown facts /reason .

Like that thses asht pash can be understand , but how we can get rid of them is the major question and til a soul is not free from these , how can she realize its true nature. There are only two ways possible one is always be sadhana may and second is the blessing of a Sadgurudev no other path is for this.

And when get free from all thses asht pasht only than he can understand the beauty of life and this whole creation , and those who are completely free from thses asht pash can be called a true Aghori, he became the self other wise we all accept thses pash as they always belongs to us ..a part of us.

Aghor sAdhAk' types, whAt Are they ??

क्या अघोर साधकों में भी स्तर होते हैं

अघोर पथ की महानता और उच्चता और भाव मायता तो सर्व विदित हैं पर जैसा की प्रकृति की हर वस्तु के साथ होता हैं की इस मार्ग में अनाधिकरियो के प्रवेश से , जिन का कोई भी स्व नियंत्रण नहीं था उसके प्रवेश से यह मार्ग जन सामान्य के बीच जैसा आदर युक्त होना चाहिए वह हुआ नहीं .

और अघोर तत्व और अघोरी हैं के नाम पर जो कुछ भी होता या वह सर्व विदित हैं पर वास्तव में वह सौभाग्शाली हैं जो इस मार्ग का पथिक हैं .. उसके कुल परिवार का गौरव हैं उसके पितृ आनंद मानते हैं जो इस मार्ग पर चला हो या चलने की तैयारी कर रहा हो .

और अघोर शब्द का अपभ्रंश हैं औघड़ .. जिसका सीधा सदा सा मतलब हम के लेते हैं वह आप से और आज की समाज से छुपा नहीं हैं. पर इसकी अ एक रूप जो अत्यंत ही गरिमामय हैं उसे हम अबधुत कहते हैं हलाकि तीनो शब्दों का अर्थ एक हैं पर अबधुत कहे जाने पर एक गरिमा का अहसास होता हैं .

और यह वास्तव में मानसिक अवस्था हैं जब किसी एक साधक की मनः अवस्था इतनी उच्च हो जाती हैं की वह साक्षात् माँ भगवती का अपने आपको एक बालक समझने लगता हैं वह जानने लगता हैं की उसकी शक्ति वास्तव में सदगुरुदेव प्रदत्त हैं वह मनमाने आचरण नहीं बल्कि हर तरफ वही दिव्यता का भाव ले कर चलता हैं . और जिसे हर तरफ एक वही दिख रहा हो उसे क्या खाद्य या काया आखाद्य का बोध . अब सभी कुछ ब्रम्ह्मय हैं पर क्या यह इतना आसन हैं की एक दीक्षा ले ली और आप .....

ऐसा नहीं हैं सारा जीवन अपना इस कसौटी पर लगाना पड़ जाता हैं तब कहीं कुछ उच्चता हाथ में आती हैं अन्यथा वेश भूषा तोकोई भी धारण कर सकता हैं पर वह परमोच्च स्थिति इतनी आसान हैं क्या ..... यह भी तलवार की धार पर चलने जैसा कठिन हैं और मानव जीवन की कठिनाईया सर्व विदित हैं .

महा निर्माण तंत्र इन अघोर साधको का भी वर्गीकरण करता हैं हलाकि सामान्य वर्ग के लिए इसका कोई महत्त्व नहीं हैं क्योंकि उनकी दृष्टी में सभी एक जैसा हैं पर फिर भी तंत्र कहता हैं ही

- ब्रम्हाबधुत
- शिवाबधुत
- वीराबधुत
- कुलाबधुत

और इनमे से जो साधक अपने सदगुरुदेव की आज्ञा नुसार एक एक क्रम को कुशलता पूर्वक पार करते हुए आगे बढ़ता जा ता हैं और उनके निर्देशन में साधना भी करता हैं और अपनी दैनिक जिम्मेवारियो से भी मुंह नहीं मोड़ता हैं वही श्रेठ साधक हैं और फिर उसकी उच्चता , शिष्यता की पराकास्ठा को देख कर वह स्वयं उसका अभिषेक कर उसे सर्वोच्च अवस्था याने कुलाब्धुत से विभूषित करते हैं और ऐसे साधक का दर्शन होना भी भाग्य हैं.

****
****

Types of Aghor sadhak

The greatness and supremacy and bhavmayta we all now know about the Aghor path. But what that happened to each and every things in this world that due to entrance of un authorized person, those who have not any self control.. so because of their so called activity this path blemished a lot .and Aghor tatv and Aghor path suffered lot…but this is very well known facts that those who are really treading on this path … he is the person of his family ..his forefather became joyful… on seeing this , that he is on the way of this great path.

The Aghor shabd now can be used as aughad . what that means we normally take .. that is not hidden from you or society par one more a highly prestigious and garimamay form also be here and that is known as abdhut ,, as all the three words carries the same meaning but we said abdhut …. One very strange but comfortable feeling arises.

And this is the basically a mental state , when any has the higher mental status a nd that became so high that he is considering himself a divine child of mother divine and also feels that his power are actually Sadgurudev pradatt, than he not doing as he likes but always guided by his inner tatv, and not only feels divinity but sees too. So now when everywhere the same divinity than what is difference between eatable or not eatable….. but can this be so easy that you have taken a Diksha and become a true Aghori in a minit……???

No it is not like that you have to put your life in hardest test only than you can be blessed with a real Aghori other wise any one take the outward appearance .. but that which highest stage is so early … this path is like to walk on sword on bare foot and we all knew that obstruction and difficulties of this world.

Maha nirvana tantra , classified the Aghor sadhak , ye s its true for a common sadhak this is not much to importance for them all are same. But still tantra said that

- **Bramhavbhut**
- **Shivavdhut**
- **Veeravdhut**
- **Kulavdhut**

And if any sadhak after taking Diksha from Sadgurudev crosses thses level one by one by so a state he reached when Sadgurudev himself does abhishek of that sadhak and seeing his complete surrender , true shishyta blessed him with kulavdhut . and even have a darshan or seeing such a sadhak is a great luck.

Saral but effective aghor prayog

आप के लिए उपयोगी कुछ विधान ......

1.**किसी भी व्यक्ति को आकर्षित करने के लिए अघोर आकर्षण मंत्र** : किसी व्यापार में या जीवन के किसी भी क्षेत्र में जब आप किसी से मिलना चाहते हैं और वह आपको समय नहीं दे रहा हो तब आप इस मन्त्र का प्रयोग करे , सरल प्रयोग हैं कोई सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं हैं

मंत्र ::: **ॐ नमो काल संहाराय ह्रीं हूँ फट "अमुक" आकर्षण स्वाहा ||**

इस मंत्र का रोज़ १०८ बार जप करे ..... दिन संख्या निर्धारित नहीं हैं . अमुक की जगह आप व्यक्ति का नाम ले ..निश्चय ही वह व्यक्ति आपसे मिलने आएगा ही .

****

2.**किसी भी प्रकार के ज्वर को दूर करने में अघोर ज्वर नाशक मंत्र** : शरीर में ज्वर प्रकोप होने के कई कारण हो सकते हैं पर वह कारण समझ में ही नहीं आ रहा हैं तो पूर्ण विस्वास के साथ आप इस प्रयोग को करें . निश्चय ही आपको लाभ मिलेगा .

मंत्र

ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः क्रोधेश्वराय नमो ज्योति पतंगाय नमो नम : सिद्ध रूद्र आज्ञा पयती स्वाहा ||

इस स्वयं सिद्ध मंत्र को सिद्ध करें की जरुरत नहीं हैं बल्कि इसे सात बार पढ़ कर सात बार रोगी के शारीर में मारे

****

3.**अघोर बिष निवारक प्रयोग** :: जरुरी नहीं की सर्प या नाग काटे तो विष का प्रभाव शरीर पर दिखे बल्कि आस पास सैकड़ो प्रकार के ऐसे विषैले जीव जंतु हैं तो हमें काट सकते हैं तो उनके विष यदि असर करक दिख रहा हो तो परिस्थिति के अनु सार समस्या गंभीर दिख रही हैं तो पहले मेडिकल हेल्प देखे और और ऐसा नही दिख हैं तो आप इस प्रयोग का उपयोग करके देखें .यह भी एक स्वयं सिद्ध मंत्र हैं इसको भी सात बार पढ़ कर जहाँ पर विषैले जीव ने कटा हैं वहां पर हाथ फेर दे विष उतरने लगेगा .

मंत्र :

जे संदेह लेह आवे ,तेहि पानी परोयी पियाई देव ,कायो पाय सर मानिक रामुप मोड़ो , मरी जासी अन बाधनो पानी पीवै बाँधी उतरी जासि |

****

4.**अघोर नज़र उतरने का प्रयोग** : अनेक छोटे बच्चो को सुन्दर स्त्री पुरुषो को इस समस्या से दो चार होना पड़ता हैं यह मुख्यता एक प्रकार से ऋ णा त्मक उर्जा का नेत्रों के द्वारा प्रभाव हैं पर इसका असर होता हैं और जब समस्या समझ में नहीं आ रही होती हैं तब घर के बड़े बुजुर्गो द्वारा इस और कहने को कहा जाता हैं , एक ऐसा सरल मंत्र जो को स्वयं सिद्ध हैं आप उपयोग कर सकते हैं बस मार्केट में कहीं से मोर पंख अगर कहीं मिले तो ले आये और जिस पर नज़र लगी हैं उसो इस से झाड़ा दे दे मतलब झाड दे तो वह समस्या से मुक्त हो जाता हैं और मनो बांछित लाभ प्राप्त कर सकते हैं .

मन्त्र :

ॐ ह्रीं नज़र उतर जा , कुरु कुरु स्वाहा ||

****

5.**बबासीर दूर का अघोर प्रयोग** : यह रोग बहुत ही दुःख दाई हैं , पीड़ित न तो किसी के सामने खुल कर कुछ कह सकता हैं न ही इस रोग के कारण उसका प्रभाव सहन कर पाता हैं.बाजार से कोई भी लाल रंग का धागा ले ले , उसमे तीन बार गाँठ लगाये . फिर २१ बार इस मन्त्र से अभिमंत्रित करके उस लाल धागे को रोगी के दाहिने पैर के अगुन्ठे से बाँध दे .इस रोग ठीक होने लगेगा .

मंत्र : **उमति उमति चल स्वाहा ||**

****

6.**शत्रु परास्त का अघोर प्रयोग** :शत्रु तो जीवन में होते ही हैं जिनके लिए कभी तो कोई कारण होता हैं कई बार तो अकारण भी . पर इन से निजात कैसे पाई जाए क्योंकि एक बहुत बड़ा हिस्सा इनसे निपटने में लग जाता हैं ,

एक मिटटी का कटोरा ले ले औसमे आक का दूध भर ले और केबल मात्र १०८ बार इस मंत्र का जप करके कसी भी चौराहे पर रख दे ..शत्रु स्वयम ही परेशानी ग्रस्त हो जायेंगे .

मंत्र : **ॐ वैरी नाशक दोस दुरय हुं फट स्वाहा ||**

****

8.**शत्रु के घर में लडाई का अघोर प्रयोग** : वैसे किसी के लिए भी इस प्रकार का प्रयोग नहीं करना चाहिए , क्योंकि अकारण ऐसे प्रयोगों का इस्तेमाल या प्रयोग बाद में बहुत परेशानी करक होता हैं पर जब सामने वाले ने ऐसी परिस्थितिया का निर्माण कर दिया हो तो तब करें... कौवे का पंख ले कर शत्रु के घर में या जहाँ उसके घर की सीमा हो . गडा दे , यह स्वयं सिद्ध मंत्र हैं अतः १०८ बार निम्न मन्त्र का जप करे वहाँ पर एक बार फूंक दे

मंत्र :: **ॐ नमो महा अमृत पंखी कुरु कुरु स्वाहा ||**

9.**पेट की समस्याओ के लिए अघोर प्रयोग** कौन हैं जो आज पेट की समस्या से न पीड़ित हो ...... हाँ कम या ज्यादा वह एक अलग बात हैं . इस स्वयम सिद्ध मन्त्र का मात्र रोज़ ११ बार उच्चारण करे , पेट की समस्याए से आपको लाभ मिलेगा .

मंत्र ::: **ॐ यो यो हनुमंत फल धगीत धग धगीत आयु राश : वारूदाह ,**

****

१० **शरीर की कांति बढ़ाने का प्रयोग.** जब चहरे में कांति युक्तता आ जाए तो क्या कहना हैं पर साथ ही साथ सारे शरीर में ऐसा हो जाये तब तो तो बात ही क्या ..यह भी एक स्वयं सिद्ध मंत्र हैं इसके प्रयोग में भी कोई ताम झाम नहीं हैं . बस जिस जल से आपको स्नान करना हैं उसको इस मन्त्र से १०८ बार बार पढ़ते हुए अभि आमंत्रित कर दे और उस जन से स्नान कर ले ,, आप अपने शरीर में होने वाले परिवर्तन से स्वयं ही परिवहित होने लगेंगे ...

मंत्र ::

ॐ ह्रीं कलीं श्रीं कंकाली काली मधुमत्ता मातंगी मद विव्हली मन मोहिनी मकर धवजे स्वाहा ||

****

११.**आधा शीशी का मन्त्र**: सर दर्द वह भी इस प्रकार का अपने आप में ही बहुत दुखदायी हैं , और इ स पीड़ा को तो भुक्त भोगी ही जान सकता हैं . और जब कोईभी इलाज काम याब नहीं दिख रहा हो तो इस प्रयोग की बिस्वास के साथ करें इस मन्त्र को किसी भी ग्रहण काल या शुभ समय में सिद्ध कर ले साथ ही साथ भगवान् हनुमान जी की कोई भी मूर्ति का श्रंगार करे और उन्हें चोला अर्पित करे फिर इस मन्त्र से अभि मंत्रित विभूति ले ले , सूर्योदय में यह क्रिया जो आगे बताई जा रही हैं वह करना हैं और रोगी का मुख पूर्व दिशा की ओर होना चाहिए ...रोगी को सामने बैठाए उसके माथे पर बाए से दाए सात बार यह मंत्र पढ़ते हुए एक रेखा खींचे और यह रेखा खीचने की प्रक्रिया सात बार करना हैं

मंत्र ::

एक चिरैया पहाड़ पर कारों कंकर खाय हांक पड़े हनुमान की आंदाशिशी जाए ||

१२. **शरीर रक्षा मंत्र** यात्रा काल में स्वाभाविक हैं की कुछ अज्ञता का भय तो सदैव मन में रहता ही हैं , इसको दूर करने में यह मंत्र बहुत ही असर कारक हैं , बस इसको कोई सिद्ध करने की जरुरत नहीं हैं बस यात्रा शुरू करते समय तीन बार इस मंत्र का उच्चारण कर ले

मन्त्र : **ॐ नमो कामरू कामख्या देवी कहाँ जाने को हुआ मेरा मंत्र ? आत्म रक्षा बंदी होऊ सावधान सर हाथ दहन्त हो बंधन गर्दन पेट पीठ बंधन और बंधन चरण अष्टांग बांधू मनसा के वरदान करा सके तो उमा के बान | कामख्या वह होऊं अमर आदेश | हाडी दासी चंडी की दुहाई** ||

सर्प संकट या मृत्यु भय नहीं रहेगा

****

Saral but effective Aghor prayog

1. **To attract other .. Aakarshan mantra** : if you want to meet some one and if he is not giving you the time and specially in the case of any business and others things than you can use this mantra , very simple and no need to get siddhita first.

Mantra: **om namo kaal sanhaaray hreem hun fat "amuk" aakarshan swaha**||

Just chant every day 108 times this mantra …. Days are not fixed , you have to replace the word amuk to the person name who you want to attract.

****

2. **To cure any fever** : there may be many reason to have fever and if not able to understand properly than do this prayog with full faith , surely you will get result.

Mantra : **om namo bhagvate rudraay namah krodheswaraay namo jyoti patangaay namo namh siddh rudra aagyapayti swaha**|

This is also swyam siddh mantra means , no need to do any thing else, just you can use. And you have recite seven times and sprinkle water over the patient body .

****

3.**Aghor vish nivarak prayog** : its not always necessary that when only any poisonous snake or other thing bites you and the result of that can be easily seen on your body, but any poisonous insects also create problem for you and if you are seeing that their bite showing serious harmful result than take medical ad first but where this is not the case than you can use this mantra and this also a swyam siddh mantra , just chant seven times this mantra and simply rub your palm on the place where that insect bite, this helps to cure.

Mantra: **je sandeh leh aawe ,tehi paani proyi dev ,kayo pay sar manic raamup modo .mari jaasi an baandhno pani pivai bandhi utri jaasi**.||

****

4. **Cure for nazar.** Many beautiful ladies and small children used to face this problem many times ,this is the result of negative energy that is emitting from eyes, and when the reason Is not to understand properly than often older one in our home advised us to do something for this since this may be the reason of nazar. This is also a swayam siddh mantra that you can use take "more pankh" means peacock feather from market and from that do jahada from this mantra and you will get the result.

Mantra: **om hreem nazar utar ja , kuru kuru swaha** ||

****

5. **To get cure from piles** : this is very troublesome dieses, the patient neither able to say properly in front of others nor able to bears the pain , take red string from any market and apply three knot in that and chant 21 times this mantra over that string, and after that tie this string to the right side feet's thumb. And he will start getting relief .

Mantra : **om umti umti chal swaha** ||

****

6.**To get victory over enemy** : enemy are the part of any person life some time with reason and sometimes without that . but how to get rid of that since most of our valuable times unnecessarily utilized in facing that .

Take any earthen lamp and fill it with milk of aak tree, and chant only 108 times this mantra and place this earthen lamp on nay square. You enemy will start getting trouble himself.

Mantra: **om vairi nashak dos duray hun fat swaha** ||

7.**To start creating problem in enemy home::** one must not do this type of prayog to any body, since if done without any concrete reason this will create problem in sadhak life too. But if the circumstance created by that fellow is too bad than you can use this prayog,

Take any crows feather and just dig a small hole and place in that (within the periphery of your enemy house) , and chant 108 time s this mantra and blow air once from your mouth .

Mantra : **on namo maha amrit pamkhi kuru kuru swaha** ||

****

9 **to get cure from stomach problem** :now a days every body is suffering from some more or less problem related to stomach , you can chant 11 times this mantra everyday , you will get relief.

Mantra :: **om yo yo hanumant fal dhageet dhag dhageet aayu raashy vaarudaah**

****

10. to increase glow in your body : when your face is glowing one than what a beauty it has …. and if it Is possible to have glowing all your body skin than ..imagine . very simple prayog no need to do any thing extra, only you have to take bath from that water after chanting 108 times this mantra. You can feel the change .

Mantra :: **om hreem kleem shreem kankali kali madhumatta matangi mad vibhli man mohini maker dwaje swaha** ||

****

11.**To get cure from migraine**:: this type of headache is very hard to bear and only the patient know , how much suffering he is undergoing, when no other medical treatment bring you the satisfactory result than you can use this prayog with faith at first do get siddhitta of this mantra by chanting in any grahaun period(means minimum 1 1 mala) and do full poojan of Bhagvaan hanuman ji and offer chola to him. And you have to do this prayog application in the morning hours and that too patient facing east direction. ask patient to sit in front of you and make line from vibhuti from left to right on hi s fore head and do this process of line making seven times .

Mantra: **ek chiraiya pahad par kaaro kankar khaay hank pde hanuman ki aandshishi jaaye** ||

****

12.**to protect your body** : in travelling time it s vary natural that there may be some fear regarding unforeseen and this is good mantra to remove that , also a swayam siddh mantra so no need to get sidhitta first. Only you have to chant thrice this mantra.

Mantra: **om namo kaamru kamakhya devi ,kahan jaane ko hua mera mantra?? Aatm raksha bandi houn saaavdhan sir haath dahant ho bandhan garden pet peeth bandahan aur bandhan charan ashtaang bandhu mansa ke vardaan kara sake to uma ke baan |kamakhya wah houn maar aadesh | hasi dasi chandi ki duhayi** ||

You will be free from snake bit or life threat.

****

TanTra , avdhut and avdhut gita

इस रहस्य से आपको परिचित कराने के लिए ही तो

मंत्र और तंत्र आखिर हैं क्या??...अनेको परिभाषाये हमारे सामने हैं निश्चय ही वह सभी अपने अपने स्थान पर सही हैं क्योंकि एक ही वस्तु को देखने वाले चाहे कई हो पर उसके बारे में विचार हर की अलग अलग होगी ही और सभी अपने अपने स्थान पर अपनी अपनी अनुभूतियो और दृष्टी से सही भी होंगे .. क्योंकि अपनी अपनी अनुभूतिया अपने अपने आज तक के ज्ञान पर ही तो बताई जा सकती हैं .....

मंत्र का सीधा सादा अर्थ तो यह हैं मन + त्रा शाब्दिक अर्थ तो यह हुआ की जो मनन करने से त्राण दे, और तंत्र का साधारण अर्थ तो फैलाब हैं ..... अर्थ किन्ही अर्थोंमे आप इसे मतलब मंत्र को टेस्ट करने की प्रयोग शाला भी कह सकते हैं , तंत्र का मतलब एक सु विचरित व्यवस्था हैं . मतलब सिस्टम ... वेद और तंत्र दो प्रमुख धारा हैं सनातन धर्म की ..वेद को निगम मार्ग कहते हैं ...और तंत्र कहलाता हैं आगम मार्ग. .

मुख्य प्रकार से ४ भागों में हमारी संस्कृत की चीजो को बाटा जा सकता हैं ये हैं श्रुति , स्मृति , पुराण और तंत्र कुलार णव तंत्र कहता हैं की सत योग में श्रुति की प्रधानता रही हैं, त्रेता युग में स्मृति की द्वापर में पुराण की प्रधानता रही हैं , और कलि युग में तंत्र की प्रधानता रहेगी. इस का यही मतलब हुआ की तंत्र मार्ग ही सर्वोच्च फल कारी हैं इस कल युग में .

पर शास्त्र कहते हैं की "**तन्यते विस्तार्यते ज्ञानं अनेन इति तन्त्रं**" अर्थात ज्ञान का विस्तार हो और जो उसकी रक्षा करे वह तंत्र के नाम से अभिहित हो ..

और एक सरल परिभाषा यह हैं की **तंत्र शब्द तन धातु से बना हैं जिसका अर्थ हैं विस्तार** ...

और जिन्होंने तंत्र की साधनाए की ही नहीं हैं बल्कि जी हैं या ऐसे कहे की अब वह तंत्र मय हो गए हैं जिनके लिए अब तंत्र का अर्थ कुछ मंत्र जप या क्रियाये नहीं हैं ऐसे ही सही अर्थो में तंत्र को अपने जीवन दर्शन से दिखलाने वाले व्यक्ति कहीं न कहीं अबधुत शब्द की परिभाषा में आते ही हैं ,, क्योंकी यदि तंत्र का अर्थ विस्तार हैं तो यह विस्तार कितना होता जायेगा .... कोई नहीं जानता और एक दिन "बूंद समानी समुद में " चरितार्थ हो जायेगा .

और जब क्रिया करने वाला और क्रिया दोनों एक हो जाये तब ही तंत्र का सत्यम शिवम् सुदरम स्वरुप हमारे सामने आता हैं .. और इसकी जीती जागती मिसाल होते हैं इस अवधूत जीवन दर्शन को साक्षात जी कर दिखने वाले अद्भुतता रखने वाले अति सामान्य पर..... परम योगी .. जो कभी इस नाम से तो कभी उस नाम से आये हैं पर हमारे जीवन पथ को आलोकित कर जाते हैं अपने जीवन रूपी तेल हमारे बुझते हुए टिमटिमाते हुए दिए में ..डालते जाते हैं ...

और हम कभी कभी सोच ही नहीं पाते की क्या ऐसा हो सकता हैं ....की क्या कोई ऐसा भी हो सकता

अवधूत शब्द की गरिमा से कौन नहीं परिचित हैं पर बिरले ही इस शब्द का सही अर्थ जानते हैं समझते हैं , पर यह शब्द अपने आप में सारा ब्रम्हांड समाये हुए हैं

और बहुत ही कम दिव्य व्यक्तित्व रहे हैं जो इससे सम्मानित हुए हैं तब निश्चित ही यह अपने आप में दिव्यता लिए होगा पहले इस शब्द का विन्यास ही समझे

पर क्या यह शब्द इतना सरल हैं की किसी के लिए भी उपयोगित हो जाये , अबधुता चार्य भगवान् दत्तात्रेय से कौन नहीं परिचित होगा जो आज भी मानव देह में हैं अनेको लोगों को आज भी सदेह दर्शन देते हैं जिनका निवास स्थान गिरनार माना जाता हैं . आखिर इस शब्द का इतना अर्थ हैं ही क्यों .... तो

- **अ का अर्थ हैं आशा से परे , आदि से निर्मल और आनंद में डूबा हुआ.**
- **व् का अर्थ हैं वासना से रहित , वर्तमान में रहने वाला ,**
- **धू से अर्थ हैं धुल और भस्म से शोभित शरीर वाला , निर्मल मन वाला ...**
- **त का अर्थ हैं तत्व की चिंता करने वाला . मतलब वह जो भी करेगा उसमे केबल इश्वर की प्रेरणा होती हैं .**

भगवान् दत्तात्रेय का समय तो काला तीत ही माना गया हैं , जिन्होंने भगवान् परुशुराम को श्री विद्या की दीक्षा दी हैं और भगवान् परुशुराम का समय तो भगवान् राम से भी पहले का हैं , इस परम योगी के ज्ञान ऐश्वर्य की तो कल्पना ही नहीं की जा सकती हैं, इन्होने कहीं नागार्जुन को रस विद्या सिखाई तो ..इस तरह यह श्रंखला कितनी लम्बी हैं कोई नहीं बता सकता हैं.

परम योगी भगवान् दत्तात्रेय जो एक अव्धुताचार्य भी हैं के द्वारा दो महत्वपूर्ण ग्रथ भी लिखे गए हैं एक का नाम "**अबधुत गीता**" हैं और दुसरे का "**जीवन मुक्त गीता** ".दोनों ही अद्वितीय ग्रन्थ हैं . जैसा की नाम ही स्पस्ट करता हैं की यह अबधुत मार्ग की विशेषताओ बारे में बताता हैं अवधूत गीता तो इतना उच्च कोटि का ग्रन्थ हैं की उसका प्रभाव तो अनेको उच्च कोटि के योगियों के ग्रंथो पर भी स्पस्ट देख गया हैं.

इस मार्ग में अवधूत गीता का एक अलग ही अर्थ हैं उसमे प्रकृति और पुरुष को एक ही माना गया हैं उन्हें अलग अलग नहीं माना गया हैं. अबधूत का मन पवित्र या अपवित्र नहीं बल्कि सभी में दिव्यता देखता हैं उसके मन के विचार शांत हो चुके होते हैं वह हर क्षण ब्रम्हानंद में डूबा रहता हैं पर यह अवस्था आसान तो नहीं .... क्योंकि जो की अहंकार से परे हो ..हर समय ब्रह्मय हो ,, अपने जीवन हो तुच्छता से उठा कर जिसने "सारा ब्रम्हांड ही अपना घर हैं साकार कर दिखाया हो .. और तभी तो साधक इस अवस्था में आ कर कह देता हैं की गगन मंडल घर मेरो ....

अवधूत गीता में अवधूता चार्य भगवान् दत्तात्रेय कहते हैं की . इस विश्व में सबसे भयानक और डरावनी चीज जो हैं उसे म्रत्यु कहते हैं हर मनुष्य हर प्राणी इससे बचना चाहता हैं मुक्त होना चाहता हैं पर यह कैसे संभव हैं... कोई उपाय हैं तो भगवान् स्वयं ही कहते हैं यह संभव हैं केबल अद्वेत भावना का विकास करके .. और अवधूत पथ या अघोर पथ इसी सत्य को आत्मसात करने का मार्ग दिखाता हैं और बताता हैं की कैसे यह सत्य को कैसे जिया जा सकता हैं ..

अवधूत गीता हमें हमारे समाज के बने बनाये सड़े गले नियम नहीं मानने को कहती वह कहती हैं की आपका कर्म और आपके द्वारा किये जा रहे कार्य और आपके संस्कार आपकी जाति तय करेंगे न की जन्म से बनी हुयी जाति को ही सर्वोपरि माना जाय क्योंकि यह मार्ग तो जीवन की अनेको विद्रूपता को समाप्त कर स्वयं ब्रह्मय होना हैं और जो इस पथ पर एक उच्चता पा चुके हो जो साक्षात् ब्रह्मय होगये हो वहीँ तो ब्राह्मण हैं ..

अन्यथा यह तो सभी जानते हैं की **जन्मनो जायते शुद्र संस्कारो द्विज उच्च्यते** कि जन्म से तो सभी शुद्र हैं क्योंकि एक शिशु को अपनी शुद्धता या अशुद्धता का कोई पता नहीं होता

सदगुरुदेव सारी दीक्षाए आसानी से दे देते हैं पर जब कोई उनसे अबधूत दीक्षा की प्रार्थना करता तो वह भी सोच में पड़ जाते इस दीक्षा के लाभ की कोई सीमा ही नहीं हैं और सारा भार सदगुरुदेव के ऊपर आ जाता हैं की वे स्वयं साधक को उस निर्मलता तक ले आये अद्भुत विधान हैं

और वे साधक भी अद्भुत रहे हैं जिन्होंने सदगुरुदेव जी के कर कमलो से यह दीक्षा प्राप्त की हैं , सदगुरुदेव जी द्वारा लिखित मंत्र तंत्र यन्त्र विज्ञानं में इस पर एक अद्भुत लेख रहा हैं की "**साधो यही घडी यही बेला**" जिसमे उन्होंने इस अबधूत पद की प्रमुखता भाव मयता को विस्तार से समझाया हैं . जो भी इस शब्द से समानित हुआ वही हैं वास्तव में अपने जीवन को एक राजा की तरह जीने वाला ,जीवन का अर्थ समझने वाला .... और तभी ऐसे अवधूत पद पर विराजमान दिव्य व्यक्ति हम सबके लिए एक मार्ग दिखाते हैं की हम भी जीवन को तुच्छता से उठाकर इस मार्ग पर चले ....

****

****

Tantra , abdhut aur abdhut gita

What is mantra and tantra ??? there are many definition available to us and naturally all are true on their respected place since even a single object , if seen by many person but their opinion about that are very much different to each other and that are true too since each one has raise with a different environment and circumstances. Since we can express his anubhav/experience on the bases of our knowledge acquired .

the simple meaning of mantra is man + tra that very roughly means that which frees you by manan means continuous positive thinking, and tantra stands for expansion or you can say this I s the lab , to test mantra .tantra a slo means a w ell defined system.. there are two main ways in our sanatan dhram one is ved and other is tantra . ved can be called nigam and tantra can be called aagam ,

and all our literature can be divided in 4 parts shruti , smriti , puraan and tantra , as kullarnav tantra states that in saty yug shriti has the most effective things so in treata the smriti and in dwaparyug puraan has a role to play but in kali yug only tantra is the most effective things.

Shastra's says that about tantra - knowledge expands and that who protect that is known as tantra .

One more easy definition is possible this tantra word is originated from tan dhatu that means expansion…

Those who not only did the tantra sadhanaye but also live the tantra and can be said became tantramy, for them now tantra is not a bundle of some action or mantra jap and those person who shows us through their life more or less can be called abdhut since if tantra means expansion than for much…. And a stage is reached when this became true " **bund samani samud me** " means a small drop of water completely mix in sea and became sea.

When the action and the person who are doing action became one only than the tantra original form that is called satyam shivam sundaram comes . and this has been proved by such a giant to whom we called abdhut. Though they live very simply but having a real stage of param yogi. Those who came in front us with different different name but the provide light to our path and not only this but they continuously ignite our life using their life as a oil for us. So that our lamp continuously lighted.

And w e never thought that ,, this is possible or this can be possible,

Who is not able to the respect of this word abdhut but very few really knew the meaning of this w ord. this world contains in it self the whole universe and very few divine one are named for that /suitable for this w ord. than this must be something different so lets try to understand what this word means.

Is this word is so easy that any one can use for this to any one. Who is not aware of avdhutaachary Bhagvaan Dattatrey who is still in his mortal form and still give the darshan to real truth seeker , still believed reside the mountain girnaar. So why this word are so important.

- A means one who is complete detached from hope , and fully absorbed in ever joy condition.
- B stand s for one who is totally free from all senses attraction and live in present
- Dhu stands for whose body covered with dust and chita ash , and with pure heart
- T stands for one who continuously absorbs in the tatva, means whatever he do , only through god's prerna .

Bhagvaan Dattatrey is age less yogi no body knew when were he born , this can be easily understood from a fact that he had given shri vidya Diksha to Bhagvaan parushuraam who is much older to Bhagvaan ram , so no body can understand the spiritual height of this great giant, he has also consider a great abdhutaacharaay and ha had written two most important granth , first is "**Abdhut Gita** " and second is " **jivan mukt Gita** ", both granth are the unique one, as the name states that abdhut gita dscribes the important philosophy of abdhut marg, and this grantha has proved to be a very effective the effect of that can be easily seen in other mahayogi literary work.

In this marg abdhut gita stands a very special place in that prakriti and purush are consider one they are not consider a separate identity, a heart or mind of a avdhut always see everything with the same divine out look. He is ever absorbed in bramhaanand but this stage is not so easy…. Since who totally dropped his ego, always immersed in bramh , raise his life from no where to a stage that is known as " whole universe is my home" onlythan he can says gagan mandal ghaer mero.

In the avdhut gita Bhagvaan dattatrey said that one of the most furious things is in this world is death, every human being and living being try to protect himself from that but that is possible is there any way… is possible , he replied yes that can be possible only through raise the feeling of adwit. and this avdhut or Aghor marg preaches the same ho w to do that. And provide a w ay to understand how this saty can be live.

Avdhut gita does not advocate so called the outdated rules made by society but it advocates that your work your mental thought your Sanskar will decide that which caste you belongs. That never depends upon the caste get by birth alone. Since this marg set a soide various vidrupta of the life one side and try to achieve a level where a person become brammay and that person can be called a Brahmin.

Otherwise this we all know that "janmnoi jayte shudra sanskara dwij uchchyte " means from birth every one belongs to shudra caste and after the Sanskar from a guru one can became a dwij means a new birth or Brahmin. since a small child does not know what is good or what is dirty.

Sadgurudev ji used to give every Diksha with ease without any hesitation but when some one ask for this , than he also had to think,, since this is not a easy one,, those who are being initiated in this diksha a whose life total depended upon Sadgurudev ji, and now Sadgurudev has to purify him . so this is not a easy task.

And sadhak are also fortunate who has initiated by Sadgurudev ji on this path and Diksha , one of the most valuable articles on this subject from Sadgurudev is appeared with a titlke " **sadho yahi ghadi yahi bela"** in that he describe in length regarding the bhav paksha /aspect of this marg. Whose who has been blessed by this word is a person who live like a king and able to understand the real meaning of life. and the person who are fully blessed by this word shows us a way so that we can also raise our life from dust to ….

Sadhanatmak time and dayS

आने वाले कुछ साधनात्मक समय और दिवस जो आपकेलिये सफलता के द्वार खोलने में सहायक हैं ही।

पूज्य सदगुरुदेव ने मंत्र तंत्र यन्त्र विज्ञानं के एक लेख में लिखा हैं की शुभ महूर्त का अपन एक विशिस्ट अर्थ हैं और इस निर्धारित समय साधना करने पर, अन्य किसी दिवस पर की अपेक्षा पूरी प्रकृति उस दिवस या दिन की विशेषता के आधार पर आपको सहयोग करती हैं ही ,, और कम प्रयास में ही आपको साधना में सफलता मिल जाती हैं .

पर उन्होंने यह भी व्यवस्था दी हैं कि जिस समय भी आपके मन में किसी भी साधना को प्रारंभ करने का भाव और मन में उत्साह आ जाये वही क्षण सर्वश्रेष्ठ हैं .

****

****

Poojy Sadgurudev wrote in mantra tantra yantra vigyan magazine that every shubh mahurt / auspicious time has its own beneficial effect and if thses period are to be utilized for sadhana than with the least effort we make , can gain much positive result. since nature help you to achieve success according to the day's nature .

And he also stated that /instructed too, whenever you have strong desire to start any sadhana , than that moment is itself a very positive period. And one can start his sadhana on that ,moment .

For all of us, The most divine day in any month are

- आप किसी भी साधना को हर महीने आने वाले , इस हम सब के लिए इस पवित्र दिवस पर कर सकते हैं , क्योंकि इस दिन का अंक हमारे प्राणाधार सद्गुरुदेव जी के जन्म दिवस से मिलता हैं .

  (you can start any sadhana on this day that comes every month since this day number matches with our Sadgurudev birth day .)

  मासिक सदगुरुदेव जन्म दिवस- 21 Feb ,21 March

कुम्भ संक्रांति (kumbh sankranti)	13 th feb
मीन संक्रांति (Meen sankaranti)	14 th march
माघी पूर्णिमा (maghi purnima)	7 feb
भाई दूज (Bhai duj)	10 th march
महाशिवरात्रि (Mahashivratri)	20 th feb
अष्टमी (the eight day of moon)	Feb -15th March-1st ,15th ,31st (दुर्गा अष्टमी)
नवमी (The Ninth day of moon)	Feb - 16th March-2nd,16th ,
एकादशी (the 1 1 th day of moon)	Feb- 17th March-4th ,18 th (पाप मोचनी एकादशी)
पुष्य नक्षत्र (pushu star day)	• 6 feb- 1.18 PM to 7 feb 1:36 PM • Ravi pushp 4 th march 8.55 pm night to 5th march 9.18 pm
पूर्णिमा (full moon day)-	7 feb 7 th march (holika dahan.)
होलिका अष्टक (Holika ashtak)	1 st march to 8 th march
होलिका दहन(Holika dahan)	7th march
अमावस्या (dark moon day)-	21 feb 22 march
श्री पंचमी Shri panchmi	27 th march
चैत्र नवरात्री प्रारम्भ Chitr Navratri start	23 march –baithhki and gudi padwa

12 feb	अमृत सिद्धि योग Amrit siddhi yog	सूर्योदय से 9.11 am तक Sunrise to 9.11 am
15 feb	सर्वार्थ सिद्धि योग.. Sarvarth Siddhi Yog	सूर्योदय से 2..45 am तक Sunrise to 2,45 AM night
15 feb	अमृत सिद्धि योग Amrit siddhi yog	सूर्योदय से 2.45 am रात्रि तक Sunrise to 2.45 am night
19 feb	सर्वार्थ सिद्धि योग.. Sarvarth Siddhi Yog	सूर्योदय से 11.o9pm रात्रि तक Sunrise to 11.o9 pM night
20 feb	सर्वार्थ सिद्धि योग.. Sarvarth Siddhi Yog	सूर्योदय से 11.15pm रात्रि तक Sunrise to 11.15 pM night
24 feb	सर्वार्थ सिद्धि योग.. Sarvarth Siddhi Yog	4.23 AM रात्रि से रात के अंत तक 4.23 AM night to end of Night
24 Feb	अमृत सिद्धि योग Amrit siddhi yog	4.23 AM रात्रि से रात के अंत तक 4.23 AM night to end of Night
28 Feb	सर्वार्थ सिद्धि योग.. Sarvarth Siddhi Yog	11.56 Am से २९ feb २.३३ तक 11.56 am to 29 th eb 2.33pm

In the End

आप सभी गुरु भाई बहिन और मित्रो के दिन प्रति दिन के बढ़ते हुआ स्नेह हमें लगातार और अधिक मेहनत को प्रेरित करता हैं अब ये अंक समाप्ति की ओर हैं, आपको ये अंक कैसा लगा , हम सभी को बिश्वास हैं की यह अंक आपके अपेक्षाओ पर खरा उतरा होगा .

इसी तरह हम सदैव आपके आशाओं पर खरे उतरें ,सदगुरुदेव भगवान से यही प्रार्थना हैं .

अगला अंक - शक्ति सायुज्य अघोर साधना महाविशेषांक –PART 3 & 4

होगा इसके विस्तृत विवरण के लिए ब्लॉग पोस्ट का इंतज़ार करे

विगत अंक की भांति इस बार भी मैं अपने सभी गुरुभाई ,बहिनों से यही निवेदन करना चाहूँगा कि , इस इ पत्रिका ओर ब्लॉग के बारे में .. समान विचार धारा वाले व्यक्तियों को अवगत कराये / बताये .जिससे सदगुरुदेव जी के दिव्य ज्ञान से वे भी लाभान्वित हो सके .

With the ever increasing /growing your support and love/sneh gives us more and more strength to work hard to come up to your expectation ,we here,have a faith that this issue come up your expectation, like that we work for you all is the prayer to beloved sadgurudev ji.

Our next issue will be Shakti SAayujy Aghor sadhana Maha Visheshank PART 3 AND 4 for details of that plz wait for related post in the blog.

Like in previous issue ,this time also make a deep request to you all as our guru brother and sister please inform other guru brother about this e magazine and blog.

Plz do visit blog

Nikhil-alchemy2.blogspot.com , yahoo group Nikhil alchemy

&

Facebook nikhil-alchemy group

We

Are praying to our beloved Sadgurudev ji

Specially on your

Sadhana Success , Spiritual Achievement and Material Growth

and

your devotion to Sadgurudev ji"

JAI SADGURUDEV